दिनांक–25.02.2025 UG Third Semester MIC,MDC (Philosophy)

Q.1. चार्वाक दर्शन में ज्ञान के स्रोतों के बारे में क्या विचार प्रस्तुत किए गए हैं?

Ans. चार्वाक दर्शन, जिसे लोकायत भी कहा जाता है, भारतीय दर्शन का एक प्रमुख भौतिकवादी और नास्तिक संप्रदाय है। इस दर्शन में ज्ञान के स्रोतों के विषय में विशेष दृष्टिकोण प्रस्तुत किए गए हैं, जो अन्य भारतीय दार्शनिक प्रणालियों से भिन्न हैं।

1. **प्रत्यक्ष अनुभव का महत्त्व :** चार्वाक दर्शन में प्रत्यक्ष अनुभव को ज्ञान का एकमात्र विश्वसनीय स्रोत माना गया है। इसके अनुसार, जो कुछ भी प्रत्यक्ष इंद्रियों (दृष्टि, श्रवण, स्पर्श, गंध और स्वाद) के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है, वही सत्य और वास्तविक है। प्रत्यक्ष अनुभव से प्राप्त ज्ञान को ही अंतिम सत्य माना गया है। इस दृष्टिकोण से चार्वाक दर्शन ने अन्य प्रमाणों (जैसे अनुमान, उपमान और शब्द) को अस्वीकार कर दिया है।
2. **अनुमान और उपमान का अस्वीकार :** चार्वाक दर्शन अनुमान और उपमान को ज्ञान के स्रोत के रूप में अस्वीकार करता है। उनके अनुसार, अनुमान (इंद्रियों से परे जाकर किसी निष्कर्ष पर पहुँचना) और उपमान (तुलना या समानता के आधार पर ज्ञान प्राप्त करना) असत्य और भ्रांतिपूर्ण हो सकते हैं, क्योंकि ये प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित नहीं होते। चार्वाक दर्शन का मानना है कि अनुमान और उपमान पर आधारित ज्ञान अविश्वसनीय है और इसमें त्रुटि की संभावना होती है।
3. **श्रुति और शास्त्रों का अस्वीकार :** चार्वाक दर्शन वेदों, शास्त्रों और धार्मिक ग्रंथों में वर्णित ज्ञान को भी अस्वीकार करता है। उनके अनुसार, ये सभी मान्यताएँ मानव निर्मित हैं और इनमें निहित सत्यता का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है। वे आस्था और विश्वास के आधार पर स्वीकारे गए ज्ञान को तर्कसंगत और विश्वसनीय नहीं मानते।

चार्वाक दर्शन का ज्ञान के स्रोतों के विषय में दृष्टिकोण तर्कसंगतता, प्रत्यक्षवाद और भौतिकवाद पर आधारित है। इसने केवल प्रत्यक्ष अनुभव को ही ज्ञान का सत्य और विश्वसनीय स्रोत माना, जिससे भारतीय दर्शन में भौतिकवादी दृष्टिकोण को मजबूती मिली।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com